

Original Article

‘योगतंत्र साधना’ - पं. गोपीनाथ कविराज के संदर्भ में

डॉ. मंजू सिंह ठाकुर

विभागाध्यक्ष, (योग एवं दर्शन विभाग) अग्रसेन महाविद्यालय रायपुर (छ.ग.)

Email: thakur.manju0108@gmail.com

Manuscript ID:

JRD -2026-180209

ISSN: 2230-9578

Volume 18

Issue 2(A)

Pp. 35-37

February - 2026

Submitted: 15 Jan. 2026

Revised: 25 Jan. 2026

Accepted: 10 Feb. 2026

Published: 28 Feb. 2026

शोध सार

हिन्दू धर्म का यदि हम अवलोकन करें तो हिन्दू धर्म में हजारों प्रकार की विधाओं और कई प्रकार की साधनाओं का वर्णन मिलता है। साधनाओं से ही सिद्धियों की प्राप्ति होती है। मनुष्य सिद्धियों की प्राप्ति इसलिए करना चाहता है, क्योंकि या तो वह उससे सांसारिक लाभ प्राप्त करना चाहता है या फिर आध्यात्मिक लाभ। पं. गोपीनाथ की योगतंत्र साधना का उद्देश्य भी यही है। तंत्र मानता है कि हम शरीर में है यह एक वास्तविकता है। हमारा भौतिक शरीर हमारे सभी कार्यों का एक केन्द्र है। अतः इस शरीर को हर तरह से तृप्त और स्वस्थ रखना अत्यंत जरूरी है। इस शरीर की क्षमता को बढ़ाना जरूरी है। इस शरीर के माध्यम से अध्यात्म को भी साधा जा सकता है। योग भी यही सिखाता है।

वास्तव में योग तंत्र साधना में शरीर, मन और काय कलेवर के सूक्ष्मतरंगों का समन्वित उपयोग होता है। योगतंत्र साधना शरीर को उतना ही महत्व देती है जितना कि मन, बुद्धि और चित्त को। सभी धर्मों में कर्मकाण्ड और पूजा उपासना के तरीके भिन्न – भिन्न हैं पर तन्त्र के संबंध में सभी एकमत हैं। पं. गोपीनाथ कविराज जी ने माना कि भारतीय संस्कृति ही विश्व संस्कृति है। योग और तन्त्र साधना के संबंध में पं. गोपीनाथ का कहना है कि भारतीय संस्कृति में तान्त्रिक साधना का अत्यंत उच्च स्थान रहा है। योग और तंत्र शास्त्र किस प्रकार मानव जाति के आध्यात्मिक उन्नति में सहायक है यह शोध का मुख्य उद्देश्य है।

मुख्य शब्द :- सूक्ष्मतरंग, संस्कृति, आध्यात्मिक काय, चित्त, कर्मकाण्ड।

प्रस्तावना

योग प्राचीनतम भारतीय अभ्यास है। जो आपके शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक स्वास्थ्य से बेहतर बनाने में मदद करता है। भारतीय योग शास्त्र के कई प्रकार हैं जिनमें से कुछ महत्वपूर्ण प्रकार निम्न हैं :-

हठ योग :- यह योग का एक अधिक चुनौतीपूर्ण प्रकार है, जिसमें अष्टांग योग की साधना की विस्तृत रूपसे एक श्रृंखलाबद्ध चर्चा की गई है।

कुण्डलिनी योग :- यह योग का एक आध्यात्मिक प्रकार है, जिसमें मंत्रों, ध्यान और क्रियाओं का उपयोग किया जाता है।

तंत्र योग :- तंत्र योग साधना योग के उन साधकों के लिए महत्वपूर्ण स्थान रखती है जो तंत्र साधना के क्षेत्र में सिद्धियाँ प्राप्त करना चाहते हैं।

इसी प्रकार योग में कर्म योग, भक्तियोग, ज्ञानयोग, लय योग की भी व्याख्या की गई है। जिसमें साधक अपनी रुचि के अनुसार मार्ग का चयन कर लक्ष्य की प्राप्ति कर सकते हैं। योग और तंत्र दोनों ही प्राचीन भारतीय आध्यात्मिक पद्धतियाँ हैं। जिनका उद्देश्य मानव जीवन को बेहतर बनाना है। दोनों में समानताएँ भी हैं और असमानताएँ भी हैं। योग और तंत्र दोनों ही ब्रह्माकीय ऊर्जा के महत्व पर जोर देते हैं। इस अर्थ को जागृत करने के लिए दोनों ही पद्धतियों में उसके उपयोग करने की अनेक विधियों का वर्णन मिलता है। योग शास्त्र और तंत्रशास्त्र दोनों ही शरीर और मन की शुद्धि को महत्वपूर्ण मानते हैं। दोनों ही पद्धतियों पर यदि हम दृष्टिगत करें तो दोनों पद्धतियों में विभिन्न प्रकार के अनुष्ठानों और क्रियाओं का वर्णन मिलता है। इसी प्रकार योगशास्त्र और तंत्रशास्त्र दोनों ही आध्यात्मिक मार्ग की ओर प्रशस्त करते हैं। दोनों ही पद्धतियों का लक्ष्य मानव जाति को अपने परम लक्ष्य मोक्ष की प्राप्ति कराना है।



Quick Response Code:



Website:

<https://jrdvrb.org/>

DOI:

10.5281/zenodo.18933253



Creative Commons (CC BY-NC-SA 4.0)

This is an open access journal, and articles are distributed under the terms of the [Creative Commons Attribution-NonCommercial-ShareAlike 4.0 International](https://creativecommons.org/licenses/by-nc-sa/4.0/) Public License, which allows others to remix, tweak, and build upon the work noncommercially, as long as appropriate credit is given and the new creations are licensed under the identical terms.

Address for correspondence:

डॉ. मंजू सिंह ठाकुर, विभागाध्यक्ष, (योग एवं दर्शन विभाग) अग्रसेन महाविद्यालय रायपुर (छ.ग.)

How to cite this article:

ठाकुर, . मंजू . सिंह . (2026). ‘योगतंत्र साधना’ - पं. गोपीनाथ कविराज के संदर्भ में. Journal of Research & Development, 18(2(A)), 35–37. <https://doi.org/10.5281/zenodo.18933253>

“मानव की इसी विशेषता का नाम ज्ञान का बंटवारा कराना है। किसी ने मानव की शारीरिक विशेषताओं का ज्ञान प्राप्त किया, दूसरे ने उसकी भावात्मक गहराईयों में डुबकी लगाई, तीसरे ने उसके बौद्धिक विस्तार को नापा, चौथे ने उसकी चेतना के झरोखे में अपनी आँख गड़ाई तब पाँचवे को उसकी आत्मिक सूक्ष्मता का आभास मिला। सबके ज्ञान को जब एकत्रित किया गया तो एक नया तथ्य मिला कि मनुष्य उतना ही नहीं है जितना वह अंदर से दिखलाई पड़ता है। वह तो अति महान, व्यापक, अनिश्चर और शाश्वत है। उसका बाहरी शरीर तो एक आवरण मात्र है। जो पुराना होने पर बदलता रहता है। उसका असली तत्व तो न कभी पुराना पड़ता है और न मरता है। जो कुछ उसका आज का सत्य है, वह बीते कल में भी था और आगे के कल में भी रहेगा। इतना ही नहीं, अपने ज्ञान के इस अनुभव ने उसे एक ओर सत्य से साक्षात्कार करा दिया कि केवल वही एक ऐसा न ही है उसके चारों ओर जो दिखाई पड़ रहा है और जो दिखलाई नहीं पड़ रहा है, सब में वही एक है।” (1)

सभी साधनाओं में श्रेष्ठ मानी गई है – योग साधनाओं में श्रेष्ठ मानी गई है – योग साधना। यह शुद्ध सात्विक और प्रायोगिक है। इसके परिणाम भी तुरंत और स्थायी महत्व के होते हैं। योग कहता है कि चित्र-वृत्तियों का निरोध होने से ही सिद्धि या समाधि प्राप्त की जा सकती है – “योगश्चित्तवृत्ति निरोधः।” मन, मस्तिष्क और चित्त के प्रति जाग्रत रहकर योग-साधना से भाव, इच्छा, कर्म और अतिक्रमण किया जाता है। इसके लिए यम, नियम, आसन, प्राणायाम और प्रत्याहार इन 5 योगों को प्राथमिक रूप से किया जाता है, उक्त 5 में अभ्यस्त होने के बाद धारणा और ध्यान स्वतः ही घटित होने लगते हैं। योग-साधना द्वारा अष्ट-सिद्धियों की प्राप्ति की जाती है। सिद्धियों को प्राप्त करने के बाद व्यक्ति अपनी सभी तरह की मनोकामनाएं पूर्ण कर सकता है।” (2)

तान्त्रिक साधना का वास्तविक स्वरूप अत्यंत ही गहनीय है। और साधारण जन के लिए बोधगय नहीं है। योग साधना में हम पाते हैं कि इसमें मानव प्रकृति के अनुसार अन्तर साधना का समन्वय होता है। दूसरी तरफ तंत्र अन्तर्याग व बहिर्याग उभयात्मक होने से योग से भी अधिक व्यापक होता है। वेदवाद का प्रथम स्वरूप अलौकिक है। उसका दूसरा रूप लौकिक है। जो समाज के प्रत्येक क्षेत्र में व्याप्त है। श्रुति शब्द से वैदिक और तान्त्रिक दोनों श्रुतियों का ग्रहण होता है। भारत में अत्याधिक मात्रा में तान्त्रिक साधना का प्रचार प्रसार है। विभिन्न प्रकार की आचार और प्रकरण पद्धतियाँ परम्परा क्रम में प्रचलित हैं। तान्त्रिक साहित्य का अति प्राचीन रूप अज्ञात और रहस्यमय है। वैदिक और उत्तर वैदिक साहित्य में इसके संकेत मिलते हैं। मृगेन्द्र तन्त्र में तान्त्रिक विकास तथा विभाग का परिचय मिलता है। इससे विदित होता है कि परमेश्वर ने सृष्टि काल में जीवों के भोग और मुक्ति रूप पुरुषार्थ की सिद्धि के लिए पंच स्त्रोत की व्यवस्था की, जो कि ऊर्ध्व, पूर्व, दक्षिण, उत्तर और पश्चिम है। जिन्हें आमाय कहते हैं। कायिक आगम बताते हैं कि सदाशिव के ही प्रत्येक मुख्य से पाँच स्त्रोतों का निर्गम हुआ है। इसमें पहला लौकिक, दूसरा वैदिक, तीसरा आध्यात्मिक चौथा अतिमार्ग और पाँचवा मन्त्रात्मक है। सदाशिव पंचमुख है, इसलिए स्त्रोतों की संख्या भी समाविष्ट रूप में पाँच है। लौकिक तथा वैदिक मंत्र भी पाँच प्रकार के हैं। तन्त्र के इन पाँच प्रसिद्ध स्त्रोतों की अपनी विशिष्टता है। जैसे पूर्व मुख से उत्पन्न तंत्र सभी प्रकार के विघ्नों का हरण करने वाला करुण तंत्र है। उत्तर मुख से उत्पन्न होने वाला तन्त्र सबके वशीकरण के लिए है। पश्चिम मुखवाला भू-प्रेत बाधा-निवारक और दक्षिण मुख से निकला भाव तन्त्र शत्रुक्षय करने वाला है। इसी प्रकार सार्वभौमिक जीवनी शक्ति “प्राण” का वह पक्ष है। जो मानव को विशेष रूप से अनुप्राणित करती है। मनुष्य की आदि शक्ति कुण्डलिनी ही है जिसकी उच्चतम अभिव्यक्ति आध्यात्मिक प्रभुधता के रूप में होती है, किन्तु यह काम शक्ति के रूप में तत्काल स्वयं को स्थूल रूप में प्रगट कर देती है। मनुष्य में यह आदि शक्ति विस्फोटक होती है। इसे हम मनमोहक आकर्षक और चुम्बकीय शक्ति के रूप में जानते हैं। अधिकतर लोग इस तथ्य को अभी भी नहीं समझते जिसको पाश्चात्य मनोविज्ञान ने पुनः खोज निकाला है तथा जो तन्त्र के अन्दर आदि काल से छिपा हुआ था कि यदि वह आदि शक्ति है जो सभी मानवीय भावनाओं तथा क्रियाओं का प्रेरणा स्त्रोत है।” (3)

इस प्रकार तान्त्रिक साधना का विभाजन कई दृष्टियों से किया जाता है। उपास्थों में देवी के प्रकार भेद के अनुसार जो प्रचलित है, उसमें महाविद्या कुमारी विभाग ही अधिक प्रसिद्ध है। इस दृष्टि से काली, तारा तथा रीविद्या महत्वपूर्ण हैं। दस महाविद्याएँ काली, तारा, श्रीविद्या, भुवनेश्वरी, भैरवी छिन्नमसता, धूमावती, बगला, मातंगी और कमला में काली का प्रथम स्थान है।

योग और तंत्र साधना के सम्बन्ध में पं. गोपीनाथ कविराज का कथन है कि भारतीय संस्कृति में तान्त्रिक साधना का अत्यंत उच्च स्थान है। आर्य संस्कृति में वैदिक भावना के साथ अवैदिक भावना का भी स्थान रहा है। इस पर आयेत्तर संस्कृति के प्रभाव को हम देख सकते हैं। यही नहीं परवर्ती ब्राम्हण संस्कृति में वैदिक, अवैदिक तथा आर्य संस्कृति का भी प्रभाव पड़ा है। विदेशी संस्कृति ने भी विभिन्न युगों में भारतीय संस्कृति से किसी न किसी प्रकार से प्रभावित किया है। सूक्ष्म दृष्टि से वैदिक धर्म में चित्त और जड़ के बीच कोई कृत्रिम भेद नहीं देखा। दोनों ही मिलकर एक अखण्ड सत्ता की अनुभूति के सहायक होते हैं। योग और तंत्र शास्त्र में इसी साधना की पुष्टि हुई है। धेरण्ड संहिता में महर्षि धेरण्ड ने साधना के माध्यम से जो समाधि या सिद्धि की प्राप्ति होती है उस संबंध में निम्न प्लोक के माध्यम से कहा है –

“योनिमुद्रां समासाध स्वयं शक्तिमयो भवेत्।

सप्तपञ्चरसेनै विहरेत्परमात्मति॥ 2॥

आनन्दमयः सम्भूत्वा एक्यं ब्रह्मणि संभवतेत्।

अहं ब्रह्मेति चोद्वत्समाधिस्तेन जायते॥ 3॥

अर्थात् योनिमुद्रा का साधन करके योगी स्वयं में शक्ति की भावना और परमात्मा में पुरुष की भावना करें। फिर यह भावना करे कि मुझमें और परमात्मा में शक्ति और पुरुष का विहार हो रहा है। तत्पश्चात् आनन्दमय ऐक्य स्थापित करता हुआ यह चिन्तन करे कि “मैं अद्वैत ब्रह्मा हूँ।” इससे जो समाधि होती है, उसे लयसिद्धि योग समाधि कहते हैं।

पं. गोपीनाथ कविराज एक महान् विद्वान और तंत्र साधक थे। उनके अनुसार तंत्र साधना एक आध्यात्मिक प्रक्रिया है, जिसका उद्देश्य मानव जीवन को बेहतर बनाना है। पं. गोपीनाथ जी ने तंत्र को एक वैज्ञानिक पद्धति के रूप में देखा, जो

ब्रम्हांडीय ऊर्जा को नियंत्रित करने और मानव शरीर के भीतर की शक्तियों को जागृत करने में मदद करती है। कविराज जी के अनुसार तंत्र साधना के महत्वपूर्ण पहलू हैं :-

- कविराज जी का मानना है कि तंत्र साधना गुरु के मार्गदर्शन में ही करनी चाहिए क्योंकि गुरु ही शिष्य को सही मार्ग दिखा सकते हैं और साधना के मध्य आने वाली परेशानियों से बचा सकते हैं।
- तंत्र साधना में मंत्रों और यंत्रों का विशेष महत्व है। मंत्रों का जाप करने और यंत्रों का उपयोग करने से ब्रम्हांडीय ऊर्जा को आकर्षित किया जा सकता है।
- तंत्र साधना से पहले शरीर और मन की शुद्धि आवश्यक है। शुद्धि के लिए विभिन्न प्रकार के अनुष्ठानों का उपयोग किया जाता है।
- तंत्र साधना का उद्देश्य हमेशा मानव कल्याण होना चाहिए इसका उपयोग किसी को नुकसान, पहुँचाने के लिए नहीं करना चाहिए। कविराज जी ने तंत्र साधना को एक व्यापक विषय बताया है, जिसमें योग, ज्योतिष, आयुर्वेद और अध्यात्म जैसे अनेक पहलू शामिल हैं। उन्होंने तंत्र को एक रहस्यमयी विद्या के रूप को देखा जो मानव जीवन के अनेक अनछुए पहलुओं को उजागर कर सकती है। पं. गोपीनाथ कविराज जी ने तंत्र साधना के विभिन्न अंगों का वर्णन किया है जिनमें से मुख्य इस प्रकार है।

आगम तंत्र – इसमें सृष्टि, प्रलय, देवताओं की पूजा और विभिन्न कार्यों की साधना का वर्णन होता है।

यामल तंत्र – इसमें देवताओं के स्वरूप उनकी शक्तियों और उनके मंत्रों का वर्णन होता है।

मुख्य तंत्र – इसमें विभिन्न प्रकार की साधनाओं जैसे कि षट्कर्म, वशीकरण, मारण, उच्चाटन आदि का वर्णन मिलता है।

इसी प्रकार पं. श्रीराम शर्मा आचार्य जी का कथन है “आध्यात्मिक साधनाएँ वस्तुतः चेतनात्मक क्षेत्र के शैशव को प्रौढ़ावस्था तक पहुँचाने की एक वैज्ञानिक पद्धति है, जिसके फलित होने में समय लगता है। उसकी धैर्यपूर्वक प्रतीक्षा किए बिना गुजारा नहीं।” (5)

निष्कर्ष

कविराज जी ने गुहातम एवं लुप्तप्राय तन्त्र ज्ञान को हमारे समक्ष हस्तामलकवत् रख है। तन्त्र उपासना प्रधान शास्त्र है, उपास्य हैं आदि शिव तथा आदि पार्वती। कविराज जी ने साधक का साध्य के साथ साक्षात्कार या परम शिव की प्राप्ति साधना की प्रक्रिया तथा सभी आवश्यक तान्त्रिक प्रक्रियाओं और सिद्धांतों का वर्णन किया है।

कविराज जी के जीवन की चरमतम उपलब्धि है “अखण्ड महायोग” जिसके लिए वे आजीवन कृतसंकल्प रहे। अखण्ड महायोग का उद्देश्य है गुरु-कृपा के प्रभाव से काल की निवृत्ति। खण्ड रूप से यह कृपा अनादिकाल से होती चली आ रही है, किन्तु इससे सामूहिक कल्याण पूर्णरूप से नहीं हो सकता। इसके लिए आवश्यक है मोक्ष पद की ओर आरोहण का कार्य समाप्त कर महाशक्ति के साथ अपना तादात्म्य सिद्ध कर, महाशक्ति सम्पन्न होकर योगी महाप्रेम की साधना के लिए विश्व में अवतरण करें। इसी महाकरुणा से प्रेरित हो महात्मा बुद्ध ने महाबोधि प्राप्त करने पर भी निर्वाण में प्रवेश न कर संसार के दुःखी जीवों के उद्धार के लिए शिव संकल्प किया था। इसी प्रक्रिया में आज भी गुरुधाम ज्ञानगंज में तपस्वीगा साधनारत हैं, जिनका एकमात्र लक्ष्य है “सर्वदुःख निवृत्ति” सर्वमुक्ति की अवधारणा। “अखण्ड महायोग” की देन कविराज जी के योग और तन्त्र के पूर्ण समन्वय का प्रतीक है जो मानव-सृष्टि के कल्याण का मार्ग प्रशस्त करेगा।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. साधना का सहज पथ, आचार्य सरयूकांत झा, छत्तीसगढ़ राज्य हिन्दी ग्रंथ अकादमी, रायपुर पृ. 51
2. सम्पूर्ण योग साधना एवं प्राणायाम, पी. एम. पब्लिकेशन्स द्वितीय संस्करण – 2017, IBN : 978-93-84558-50-5 पृ. 26
3. नव योगिनी तंत्र, महिलाओं के लिए योग साधना पद्धति, योग पब्लिकेशन्स ट्रस्ट, मुंगेर, बिहार, द्वितीय संस्करण 1982 IBN:81-86336-15-X पृ. 71
4. धेरण्ड संहिता, स्वामी निरंजनानंद सरस्वती, योग पब्लिकेशन्स ट्रस्ट, मुंगेर, बिहार, भारत पृ. 374
5. साधना से सिद्धि – 1, पं. श्रीराम शर्मा वाडमय, अखण्ड ज्योति संस्थान, मथुरा पृ. e-12
6. 04 धेरण्ड